'शिवरात्रि'

भारत में प्रत्येक ऋतु-परिवर्तन त्योहार के रूप में मनाया जाता है। ग्रीष्म से शीत के आगमन का प्रतीक शरद ऋतु में , शारदीय नवरात्रि , दीपावली के 'पंच-पर्व' (धन-तेरस , नरक-चौदस , दीपावली, अन्नकूट,एवं भाई-दूज) तथा शीत से ग्रीष्म ऋतु के आगमन में 'बसंतोत्सव', 'शिवरात्रि' एवं 'होली' और फिर 'चैत्रीय नवरात्रि' मनाने का विधान है। बसंत यौवन का त्योहार है , शिवरात्रि 'मिलन एवं सृजन' का वहीं होली उल्लास का। यही प्रक्रिया हमें पृकृति में भी देखने को मिलती है। बसंत में फूलों का खिलना, परागण और फलन (फल का निर्माण) क्रमशः इसी क्रम में होते मिलेंगें। अँग्रेजी में इसे ब्लूम , पोलिनेशन, और फ्रक्टिफिकेशन कहा जाता है। नई संतति के स्वागत में , नव-संवत्सर में शक्ति पूजा के विधान में एक निश्चित प्राक्रतिक क्रम का होना एक संयोग न होकर ऋषियों (द्रष्टा) के गहरे मनन का द्योतक है।

'मिलन एवं सृजन' का त्योहार शिवरात्रि :- संतति प्रसार का माध्यम होने के कारण शास्त्रों में 'मिलन'/ एक पुनीत क्रत्य माना गया है। मिलन के पहले संयम और व्रत का विधान है।

प्रकृति चक्र के त्योहारों में जनसाधारण की आस्था जमाने के लिए प्रत्येक त्योहार को देवताओं से सम्बद्ध किया गया है। शिवरात्रि पर्व में शिव और पार्वती के परिणय के माध्यम से पुष्पित और फलित होने की क्रिया का संकेत दिया गया है।

पौराणिक गाथा के अनुसार शिवरात्रि की कथा कुछ इस प्रकार है-

पौराणिक काल में तारक नाम का एक महान बलशाली असुर राजा हुआ। उसके पराक्रम के आगे मानव क्या देवता भी टिक नहीं सके और स्वर्ग छोड़ कर भाग गये। तीनों लोकों का आधिपति बन जाने से तारक जो कि पहले तपस्वी एवं भक्त था , निरंकुश हो गया। उसकी वीरता क्रूरता में परिवर्तित हो गई। जब राजा ही अत्याचारी हो जाय तो प्रजा को कौन बचाये... ? सभी ब्रह्मा जो की सुर-असुर और मानवों के आदि पिता हैं, के पास पहुंचे, और मुक्ति का उपाय जानना चाहा। ब्रह्मा ने कहा कि तारक बहुत ही वीर है। उसे मारने के लिये किसी महावीर को जन्म लेना होगा। ऐसा महावीर मात्र महादेव शंकर और देवी पार्वती से ही जन्म ले सकता है।

देवता उपाय जान कर लौट तो आए पर यह उपाय इतना सरल नहीं था। देवी पार्वती हिमालय के यहाँ जन्म लेकर युवास्था को प्राप्त तो कर चुकीं थी, परंतु देवाधिदेव शंकर सती के वियोग में वैरागी हो कर समाधिस्थ थे। देवताओं ने कामदेव कि सहायता ली। कामदेव परोपकार हेतु 'अनंग' होकर भी देवताओं का कार्य कर गये। शिव समाधि से जागे। शिव-पार्वती का विवाह हुआ , जिसका कल्याणकारी

वर्णन कवियों ने बड़े रस के साथ किया है, जिसमें हास्य और व्यंग्य का भी अभीष्ट पुट देखने को मिलता है। विवाहोपरांत कार्तिकेय का जन्म हुआ जिनके द्वारा तरकासुर के अंत हुआ और देवता पुनः सुखी हुए। यह सम्पूर्ण गाथा कालिदास ने 'कुमार-संभव' बड़े सुंदर ढंग से कही है।

इस प्रकार शिवरात्रि पर्व महादेव और देवी पार्वती के परिणय का दिन माना गया है। इसमें व्रत और शिव-पार्वती के पूजन का विधान है। इसमें दोनों के प्रतीक 'शिवलिंगम' के पूजन का विधान है। सर्वश्रेष्ठ आराधना 'पार्थिव-लिंगम' (मिट्टी से बना गया विग्रह) की मानी गई है। मिट्टी से बना विग्रह पूजन के बाद विसर्जन का विधान संभवतः जीवन की नश्वरता को इंगित करता है और मर्त्य-लोक के जन्म-मृत्यु के चक्र का स्मरण कराता है।

परंतु 'शिवलिंगम' का पूजन....! आज के मनीषियों यह अजीब लगता है। कुछ अपने अज्ञान से भरे विद्वान इसे हिन्दू धर्म की पोंगा पंथी व कुछ इसे अतिकामुकता मानते हैं, जिसकी वजह से हमारी संस्कृति को अन्य धर्मों की तुलना में पिछड़ा माना जाता है।

इस तथ्य को समझने के लिए उन्हें कहीं दूर नहीं वरन् अपने चारो ओर ही दृष्टि डालनी होगी-

हमारे चारो ओर केवल सृष्टि ही दिखाई देती है। दूरबीन से सुदूर अथवा सूक्ष्म-दर्शी से अति सूक्ष्म परन्तु चारो ओर सृष्टि ही दिखाई देगी। हम स्वयं भी सृष्टि का हिस्सा हैं। सृ का अर्थ है प्रगति करना, गति करना होता है वहीं सृजन का मतलब रचना करना , प्रसव, होता है। इन्हीं दोनों से शब्द सृष्टि बना है। जीवन व्यापार में सृष्टि या सृजन ही सर्वोपरि है। इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण संसार (सदैव गतिमान) में कुछ भी नहीं है। इसीलिए प्राचीन धर्मों में सृजन और सृजन कर्ता सबसे पूज्यनीय थे।

कालांतर जब निराकार ने आकार लेना प्रारम्भ किया तब प्रतीकों की पूजा होने लगी। लगभग सभी प्राचीन धर्म जो एशिया से ही उभरे , उनमें सृजन के प्रतीकों की पूजा का विधान था। स्त्री पुरुष के सृजनांगों का प्रतीक 'शिवलिंग' जो भारत में आज भी पूजित है , प्राचीन कल में इसकी पूजा का विधान लगभग पूरे सभ्य एशिया में प्रचलित था। अन्य धर्मों के अभ्युदय के साथ यह विग्रह धीरे-धीरे नष्ट होते गए परंतु आज भी इनके अवशेष मिल जाते हैं। बहुचर्चित 'होली ग्रेल' भी स्त्री का गर्भ और पुरुष बीज का द्योतक है। इसी धर्म के एक 'सेक्ट' (पंथ) जिसके अनुयायियों में एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक (गति के नियमों के प्रणेता) शामिल माने जाते थे में , प्रचिलित पवित्र प्रथा 'हाइरो गैमस' (पवित्र परिणय) 'जीवंत मिथुन' की आराधना का वर्णन है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आज के सभी प्रमुख प्रचलित धर्मों में प्रकृति के सृजन तत्व की आराधना का विधान कभी न कभी अवश्य रहा है।

भारत में हम इसे शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं।

विशेष:- निर्जन प्रदेश या रात्रि में शिवलिंगम 'दिग्दर्शी' (दिशा दर्शक) का कार्य भी करता है। शिवलिंगम का अरघा सदैव उत्तर दिशा की ओर रहता है। अरघे को देख कर हम उत्तर दिशा का पता लगा सकते हैं।